

Think
IAS...



 Think
Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

विश्व का भूगोल

(भाग-2)



दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (*Distance Learning Programme*)

Code: UPPM07



उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

विश्व का भूगोल

(भाग-2)



641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

5. जलमंडल	5-47
5.1 महासागरीय नितल के उच्चावच	5
5.2 महासागरीय जल का तापमान एवं लवणता	12
5.3 महासागरीय जल का घनत्व	19
5.4 महासागरीय निक्षेप	20
5.5 महासागरीय धाराएँ	22
5.6 प्रवाल एवं प्रवाल भित्तियाँ	32
5.7 ज्वार-भाटा	35
5.8 सागरीय संसाधन	37
5.9 जलस्रोत एवं हिमावरण में परिवर्तन एवं इसके प्रभाव	42
6. भारत सहित विश्व के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण	48-85
6.1 मृदा संसाधन	48
6.2 विश्व के प्रमुख बायोम	54
6.3 खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	55
6.4 विश्व में वन एवं मत्स्य संसाधन का वितरण	76
7. आर्थिक भूगोल	86-123
7.1 कृषि	86
7.2 पशुपालन एवं मत्स्यपालन	94
7.3 भारत सहित विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	97
7.4 भारत सहित विश्व के उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक	107
8. जनसंख्या एवं अधिवास	124-136
8.1 जनसंख्या के प्रकार एवं इसके प्रतिरूप	124
8.2 पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण	126
8.3 जनसंख्या वृद्धि एवं इसके सिद्धांत	130
8.4 नगरीकरण	132

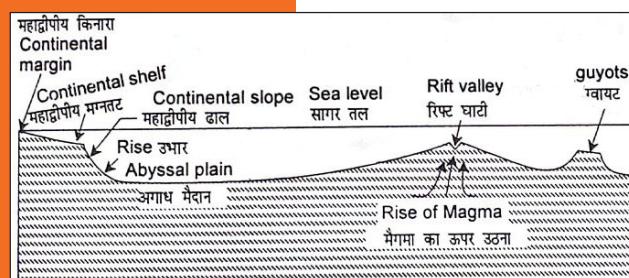
9. मानव भूगोल	137-150
9.1 विश्व की प्रजातियाँ तथा जनजातियाँ	137
9.2 मानव प्रवास	144
9.3 विश्व की शरणार्थी समस्या	146
10. विश्व में परिवहन के प्रमुख साधन	151-159
11. विश्व का महाद्वीपीय भूगोल	160-226
11.1 एशिया	160
11.2 यूरोप	179
11.3 अफ्रीका	189
11.4 उत्तरी अमेरिका	197
11.5 दक्षिण अमेरिका	206
11.6 ऑस्ट्रेलिया	213
11.7 अंटार्कटिका	218
11.8 विविध	219

पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का लगभग 71% भाग जल के रूप में महासागरों, सागरों व खाड़ियों के अंतर्गत विस्तारित है, जिसे समग्र रूप में जलमंडल कहा जाता है। पृथ्वी पर स्थानिक तौर पर जल का वितरण नहीं है। उत्तरी गोलार्द्ध में जहाँ स्थल की तुलनात्मक रूप से अधिकता है, वहाँ दक्षिणी गोलार्द्ध में जल की। पृथ्वी पर उपस्थित कुल जल का लगभग 97.25% जल महासागरों में है, जो खारा जल है अथवा पीने योग्य नहीं है। शेष लगभग 3% जल, जो ताजा एवं पीने योग्य है, हिमानियों (लगभग 2%), भौम जल, झीलों, नदियों आदि के अंतर्गत आता है।

जलस्रोत या जलभंडार	समस्त जलराशि का प्रतिशत
महासागर	97.25
हिमानियाँ एवं हिमटोपियाँ	2.05
भूमिगत जल	0.68
झीलें	0.01
मृदा में नमी	0.005
वायुमंडलीय नमी	0.001
नदियाँ	0.0001
जैवमंडलीय जल	0.00004

5.1 महासागरीय नितल के उच्चावच (Reliefs of the Ocean Basin)

पृथ्वी के लगभग तीन-चौथाई भू-भाग पर महासागरों का विस्तार है। पुरातन समय में महासागरों के नितल के संबंध में स्पष्टता नहीं थी, किंतु बाद में विज्ञान व तकनीकी विकास द्वारा महासागरों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि महासागरों के नितल समतल नहीं हैं। इन नितलों पर पर्वत, गहरी खाड़ियाँ तथा विशालतम् मैदान हैं। ध्वनि तरंगों के द्वारा परोक्ष रूप से महासागरीय नितलों का मानचित्रांकन संभव हुआ। सामान्यतः महासागरीय नितल को चार मुख्य वर्गों में विभक्त किया जाता है-



सागर नितल की आकारिकी

महाद्वीपीय मण्टट (Continental Shelf)

समुद्रतट से समुद्र की ओर मंद ढाल वाला जलमण्टट धरातल महाद्वीपीय मण्टट होता है। मण्टट का निर्माण सामान्यतः समुद्र की ऊँचाई बढ़ने या महाद्वीप के तटीय भागों के जलमण्टट होने अथवा जल के नीचे महासागरीय निक्षेपों के कारण होता है। यह महासागर का सबसे उथला भाग होता है, जिसकी औसत ढाल प्रवणता 1° से 3° या उससे कम होती है। यह शेल्फ अत्यंत तीव्र ढाल पर समाप्त होता है, जिसे 'शेल्फ अवकाश' कहा जाता है। मण्टटों की चौड़ाई विभिन्न महासागरों में भिन्न-भिन्न है। यू.एस.ए. के पूर्वी तट पर इसकी चौड़ाई लगभग 120 किमी. है तो वहाँ दक्षिण अमेरिका में यह लगभग अनुपस्थित है। भारत में भी मण्टटों की चौड़ाई दोनों तटों पर भिन्न है। भारत का पश्चिमी मण्टट पूर्वी मण्टट की अपेक्षा अधिक चौड़ा है। सामान्यतः मण्टट की चौड़ाई तथा ढाल में विपरीत संबंध होता है। जहाँ मण्टट की चौड़ाई अधिक होती है, वहाँ ढाल का कोण न्यून होता है। महासागरों के कुल क्षेत्रफल का लगभग 8.6% भाग महाद्वीपीय मण्टट है। अटलाटिक महासागर में 13.3%, प्रशांत महासागर में 5.7% तथा हिंद महासागर में 4.2% भागों पर मण्टट का विस्तार है। महाद्वीपीय मण्टट पर निक्षेपित पदार्थ अधिकांशतः स्थलीय अवसाद होते हैं। मण्टट कई प्रकार के होते हैं, जैसे- प्रवाल भित्ति मण्टट, हिमानीकृत मण्टट, बड़ी नदियों के मुहाने पर निर्मित मण्टट आदि।

महाद्वीपीय मण्टट संसाधनयुक्त होते हैं। इन तटों पर समुद्री खाद्य पदार्थों का दोहन, मत्स्य आखेट आदि होता है। खनिजों के संभावी स्रोतों के होने के साथ-साथ विश्व के कुल खनिज तेल व गैस उत्पादन का लगभग 20% महाद्वीपीय मण्टट क्षेत्र से ही प्राप्त होता है। बालू व बजरी का खनन भी इन मण्टटों से होता है।

- तटीय प्रवाल भित्ति का विकास महाद्वीप या द्वीप के किनारे होता है।
- अवरोधक प्रवाल भित्ति का निर्माण सागरीय तट से दूर किंतु समानांतर होता है।
- संसार की सबसे बड़ी अवरोधक प्रवाल भित्ति ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्वी तट पर ग्रेट बैरियर रीफ है।
- रंग परिवर्तन की प्रक्रिया प्रवाल विरंजन या कोरल ब्लीचिंग कहलाती है।
- समुद्री जल के तापमान में वृद्धि प्रवाल विरंजन का मुख्य कारण है।
- भारी वर्षा एवं बाढ़, अवसादों में वृद्धि, प्रवालों में होने वाले संक्रामक रोग, कोरल खनन, आर्द्धभूमि का भरना तथा एलनीनो प्रभाव इत्यादि के कारण प्रवाल विरंजन होता है।
- जब 70% प्रवाल विरंजन से प्रभावित होते हैं, तो कैटास्ट्रॉफिक विरंजन का स्तर होता है।
- चंद्रमा, सूर्य तथा पृथ्वी की पारस्परिक गुरुत्वाकर्षण क्रिया ज्वार-भाटा की उत्पत्ति का कारण है।
- प्रत्येक स्थान पर सामान्यतः दो बार ज्वार तथा दो बार भाटा उत्पन्न होता है।
- अधिकतम ज्वारीय उभार तब होता है, जब सूर्य, चंद्रमा तथा पृथ्वी एक सीधी रेखा (Syzygy) में होते हैं।
- इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर स्थित साउथहैंपटन में ज्वार प्रतिदिन चार बार आते हैं।
- जलविद्युत उत्पादन के स्रोत रूप में ज्वारीय बल का उपयोग किया जाता है।
- प्लैंकटन के अंतर्गत प्रकाशित मंडल में तैरने वाले सूक्ष्म पौधों तथा सूक्ष्म जीवों को सम्मिलित किया जाता है। नेकटन समूह के अंतर्गत बड़े आकार वाले तथा शक्तिशाली तैरने वाले जंतु आते हैं।
- सागरीय जीवों में प्रवाल का प्रमुख स्थान है, इसी कारण इन्हें सागरीय वर्षा वन कहते हैं।
- सागरीय खेती के अंतर्गत आयस्टर की खेती सर्वाधिक प्रचलित है। आयस्टर की खेती के लिये जापान में निलंबन कृषि तथा ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में रैक एवं स्टिक कृषि प्रणाली आदि का विकास किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

- | <p>1. सूची-I तथा सूची-II को सुमिलित कीजिये तथा नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये—</p> <p style="text-align: center;">UPPCS (Mains) 2017</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <thead> <tr> <th style="text-align: center;">सूची-I
(महासागर)</th> <th style="text-align: center;">सूची-II
(सबसे गहरे स्थान)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>A. प्रशांत महासागर</td> <td>1. जावा ट्रेंच</td> </tr> <tr> <td>B. अटलांटिक महासागर</td> <td>2. यूरेशियन बेसिन</td> </tr> <tr> <td>C. हिंद महासागर</td> <td>3. मैरियाना ट्रेंच</td> </tr> <tr> <td>D. आर्कटिक महासागर</td> <td>4. प्यूटोरिको ट्रेंच</td> </tr> </tbody> </table> <p>कूट:</p> <table border="0" style="margin-left: auto; margin-right: auto;"> <tr> <td style="text-align: center;">A</td> <td style="text-align: center;">B</td> <td style="text-align: center;">C</td> <td style="text-align: center;">D</td> </tr> <tr> <td style="text-align: center;">(a) 4</td> <td style="text-align: center;">3</td> <td style="text-align: center;">2</td> <td style="text-align: center;">1</td> </tr> <tr> <td style="text-align: center;">(b) 3</td> <td style="text-align: center;">4</td> <td style="text-align: center;">1</td> <td style="text-align: center;">2</td> </tr> <tr> <td style="text-align: center;">(c) 1</td> <td style="text-align: center;">3</td> <td style="text-align: center;">4</td> <td style="text-align: center;">2</td> </tr> <tr> <td style="text-align: center;">(d) 2</td> <td style="text-align: center;">4</td> <td style="text-align: center;">3</td> <td style="text-align: center;">1</td> </tr> </table> <p>2. अधोलिखित में कौन शीत महासागर धारा नहीं है?</p> <p style="text-align: center;">UPPCS (Pre) 2017</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%;">(a) कनारीज</td> <td style="width: 50%;">(b) हंबोल्ट</td> </tr> <tr> <td>(c) ओयाशीओ</td> <td>(d) अगुल्हास</td> </tr> </table> | सूची-I
(महासागर) | सूची-II
(सबसे गहरे स्थान) | A. प्रशांत महासागर | 1. जावा ट्रेंच | B. अटलांटिक महासागर | 2. यूरेशियन बेसिन | C. हिंद महासागर | 3. मैरियाना ट्रेंच | D. आर्कटिक महासागर | 4. प्यूटोरिको ट्रेंच | A | B | C | D | (a) 4 | 3 | 2 | 1 | (b) 3 | 4 | 1 | 2 | (c) 1 | 3 | 4 | 2 | (d) 2 | 4 | 3 | 1 | (a) कनारीज | (b) हंबोल्ट | (c) ओयाशीओ | (d) अगुल्हास | <p>3. निम्नलिखित में से कौन किसी जल निकाय में घनत्व प्रवणता को दर्शाती है? UPPCS (Mains) 2016</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%;">(a) एकोक्लाइन</td> <td style="width: 50%;">(b) हेलेक्लाइन</td> </tr> <tr> <td>(c) पिक्नोक्लाइन</td> <td>(d) थर्मोक्लाइन</td> </tr> </table> <p>4. अधोलिखित सागरों में से किसमें तट रेखा नहीं है? UPPCS (Mains) 2016</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%;">(a) काला सागर</td> <td style="width: 50%;">(b) सारगेसो सागर</td> </tr> <tr> <td>(c) अजोव सागर</td> <td>(d) कैस्पियन सागर</td> </tr> </table> <p>5. निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे गहरा सागर है? UPPCS (Mains) 2015</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%;">(a) दक्षिण चीन सागर</td> <td style="width: 50%;">(b) बेरिंग सागर</td> </tr> <tr> <td>(c) भूमध्य सागर</td> <td>(d) जापान सागर</td> </tr> </table> <p>6. निम्नलिखित में कौन सी सर्वाधिक गहरी महासागरीय गर्त है? UPPCS (Mains) 2015</p> <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%;">(a) टोंगा</td> <td style="width: 50%;">(b) मैरियाना</td> </tr> <tr> <td>(c) प्यूटोरिको</td> <td>(d) इजू-बेनिन</td> </tr> </table> | (a) एकोक्लाइन | (b) हेलेक्लाइन | (c) पिक्नोक्लाइन | (d) थर्मोक्लाइन | (a) काला सागर | (b) सारगेसो सागर | (c) अजोव सागर | (d) कैस्पियन सागर | (a) दक्षिण चीन सागर | (b) बेरिंग सागर | (c) भूमध्य सागर | (d) जापान सागर | (a) टोंगा | (b) मैरियाना | (c) प्यूटोरिको | (d) इजू-बेनिन |
|---|------------------------------|------------------------------|--------------------|----------------|---------------------|-------------------|-----------------|--------------------|--------------------|----------------------|---|---|---|---|-------|---|---|---|-------|---|---|---|-------|---|---|---|-------|---|---|---|------------|-------------|------------|--------------|--|---------------|----------------|------------------|-----------------|---------------|------------------|---------------|-------------------|---------------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------|--------------|----------------|---------------|
| सूची-I
(महासागर) | सूची-II
(सबसे गहरे स्थान) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| A. प्रशांत महासागर | 1. जावा ट्रेंच | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| B. अटलांटिक महासागर | 2. यूरेशियन बेसिन | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| C. हिंद महासागर | 3. मैरियाना ट्रेंच | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| D. आर्कटिक महासागर | 4. प्यूटोरिको ट्रेंच | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| A | B | C | D | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) 4 | 3 | 2 | 1 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (b) 3 | 4 | 1 | 2 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) 1 | 3 | 4 | 2 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (d) 2 | 4 | 3 | 1 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) कनारीज | (b) हंबोल्ट | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) ओयाशीओ | (d) अगुल्हास | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) एकोक्लाइन | (b) हेलेक्लाइन | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) पिक्नोक्लाइन | (d) थर्मोक्लाइन | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) काला सागर | (b) सारगेसो सागर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) अजोव सागर | (d) कैस्पियन सागर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) दक्षिण चीन सागर | (b) बेरिंग सागर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) भूमध्य सागर | (d) जापान सागर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) टोंगा | (b) मैरियाना | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (c) प्यूटोरिको | (d) इजू-बेनिन | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

7. निम्न में से कौन जल लवणता प्रवणता को दर्शाता है?
- UPPCS (Pre) 2015**
- | | |
|-------------------|----------------|
| (a) थर्मोक्लाइन | (b) हेलोक्लाइन |
| (c) पाइक्नोक्लाइन | (d) केमेक्लाइन |
8. निम्नलिखित समुद्री धाराओं में कौन हिंद महासागर की धारा नहीं है?
- UPPCS (Mains) 2014**
- | |
|--------------------------------|
| (a) अगुल्हास धारा |
| (b) मोजांबिक धारा |
| (c) दक्षिण हिंद महासागरीय धारा |
| (d) बंगुएला धारा |
9. सारगैसो समुद्र की विशिष्टता है-
- UP (RO/ARO) Pre 2014**
- | |
|-----------------------------|
| (a) अति ठंडा पानी |
| (b) अति गर्म पानी |
| (c) अत्यधिक लवणीय पानी |
| (d) विशिष्ट समुद्री वनस्पति |
10. निम्नलिखित प्रशांत महासागरीय द्वीपों में से कौन मलेशिया द्वीप समूह में सम्मिलित है?
- UPPCS (Mains) 2012**
- | | |
|-------------------|-------------------|
| (a) सोलोमन द्वीप | (b) गिलबर्ट द्वीप |
| (c) सोसायटी द्वीप | (d) मार्शल द्वीप |
11. निम्नलिखित में से किस सागर में लवणता सबसे अधिक है?
- UPPCS (Pre) 2012**
- | | |
|-------------------|-----------------|
| (a) कैस्पियन सागर | (b) भूमध्य सागर |
| (c) लाल सागर | (d) मृत सागर |
12. महाद्वीपीय मन्त्र के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. समुद्र तट से समुद्र की ओर अधिक ढाल वाला जलमग्न धरातल महाद्वीपीय मन्त्र होता है।
 2. महाद्वीपीय मन्त्र का ढाल 1° से 3° या इससे कम होता है।
 3. सामान्यतः जहाँ मन्त्र की चौड़ाई अधिक होती है, वहाँ ढाल का कोण न्यून होता है।
- उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 1 और 2 |
| (c) केवल 2 और 3 | (d) केवल 1 और 3 |
13. हिंद महासागर के उच्चावच के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. हिंद महासागर के नितल पर अनेक चौड़े जलमग्न कटक हैं।

2. सुंडा गर्त तथा प्लॉटरिको गर्त इस महासागर में स्थित अन्य कटक हैं।
 3. हिंद महासागर में मॉरीशस द्वीप ज्वालामुखी प्रक्रिया से उत्पन्न द्वीप है।
- उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 1 और 2 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3 |
14. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. प्रशांत महासागर की आकृति त्रिभुजाकार है।
 2. समुद्री पर्वत तथा गुयॉट प्रशांत महासागर में अधिक पाए जाते हैं।
 3. प्रशांत महासागर में गर्तों की संख्या सबसे कम है।
 4. प्रशांत महासागर के पूर्वी तट पर महाद्वीपीय मन्त्र है।
- उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 3 और 4 | (d) केवल 1 और 4 |
15. निम्नलिखित में से किन सागरों में मध्यम लवणता पाई जाती है?
- | | |
|-----------------|-----------------|
| 1. आर्कटिक सागर | 2. बेरिंग सागर |
| 3. चीन सागर | 4. बाल्टिक सागर |
| 5. लाल सागर | |
- कूट:
- | | |
|--------------------|-----------------------|
| (a) केवल 1, 2 और 3 | (b) केवल 2, 3 और 4 |
| (c) केवल 1, 3 और 4 | (d) केवल 2, 3, 4 और 5 |
16. निम्नलिखित में से कौन सागरीय लवणता को नियंत्रित करने वाले कारक हैं?
- | | |
|------------------|-------------------------------|
| 1. वाष्पीकरण | 2. वर्षा द्वारा जल की आपूर्ति |
| 3. सागरीय धाराएँ | 4. नदी के जल का आगमन |
| 5. वायु की दिशा | |
- कूट:
- | | |
|----------------------|---------------------|
| (a) केवल 1, 2 और 3 | (b) केवल 1, 2 और 4 |
| (c) केवल 1, 2, 3 व 4 | (d) 1, 2, 3, 4 और 5 |
17. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिये-
1. पृथ्वी का आवर्तन
 2. वायुदाब और हवा
 3. महासागरीय जल का घनत्व
 4. पृथ्वी का परिक्रमण

- उपर्युक्त में से कौन-से कारक महासागरीय धाराओं को प्रभावित करते हैं?
- केवल 1 और 2
 - केवल 1, 2 और 3
 - केवल 1 और 4
 - केवल 2, 3 और 4
18. निम्नलिखित युगमों में से कौन-सा सुमेलित नहीं है?
- | | |
|---------------------|-------------|
| (जलधारा) | (विशेषताएँ) |
| (a) मोजांबिक धारा | — ठंडी |
| (b) केनारी धारा | — ठंडी |
| (c) नॉर्वेजियन धारा | — गर्म |
| (d) सुशीमा धारा | — गर्म |
19. प्रवाल भित्तियों में किसकी मात्रा अधिक होती है?
- सोडियम सल्फेट
 - कैल्सियम कार्बोनेट
 - पोटैशियम नाइट्रोट्रो
 - कैल्सियम सल्फेट
20. प्रवाल भित्तियों का विकास सामान्यतः किन क्षेत्रों में अधिक होता है?
- उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र
 - उष्णकटिबंधीय क्षेत्र
 - ध्रुवीय क्षेत्र
 - स्टेपी तुल्य जलवायु क्षेत्र
21. ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट बैरियर रीफ किस तरह की प्रवाल भित्ति है?
- तटीय प्रवाल भित्ति
 - अवरोधक प्रवाल भित्ति
 - एटॉल
 - इनमें से कोई नहीं।
22. महासागरों और समुद्रों में ज्वार-भाटा किसके/किनके कारण होता/होते हैं?
- सूर्य का गुरुत्वीय बल
 - चंद्रमा का गुरुत्वीय बल
 - पृथ्वी का अपक्रोचीय बल
- नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये—
- केवल 1
 - केवल 2 और 3
 - केवल 1 और 3
 - 1, 2 और 3
23. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये—
- किसी स्थान पर प्रत्येक दिन दो बार आने वाले ज्वार को अर्द्ध दैनिक ज्वार कहते हैं।
 - प्रत्येक ज्वार 12 घंटे 26 मिनट बाद आता है। इस ज्वार में उच्च व निम्न ज्वार की ऊँचाई समान होती है।
 - असामान्य रूप से उत्पन्न उच्च ज्वार को उप-भू ज्वार कहते हैं।
- उपरोक्त कथनों में से कौन-से कथन सही हैं?
- केवल 1 और 2
 - केवल 2 और 3
 - केवल 1 और 3
 - 1, 2 और 3

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (c) | 4. (b) | 5. (a) | 6. (b) | 7. (b) | 8. (d) | 9. (d) | 10. (a) |
| 11. (d) | 12. (c) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (a) | 16. (d) | 17. (b) | 18. (a) | 19. (b) | 20. (b) |
| 21. (b) | 22. (d) | 23. (d) | | | | | | | |

अभ्यास प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

- महासागरीय नितल पर स्थित विभिन्न उच्चावच का वर्णन कीजिये।
- अटलाटिक महासागर के नितल उच्चावच का सचित्र वर्णन कीजिये।
- महासागरीय जल के तापमान को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिये।
- महासागरीय लवणता से आप क्या समझते हैं? महासागरीय लवणता को नियंत्रित करने वाले विभिन्न कारकों की चर्चा कीजिये।
- अटलाटिक महासागर की मुख्य धाराओं का वर्णन करते हुए इन धाराओं के तटीय प्रदेशों पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा कीजिये।
- प्रवाल भित्ति क्या होती है? इसके विकास के लिये आवश्यक दशाओं की चर्चा कीजिये।
- ज्वार-भाटा को परिभाषित करते हुए ज्वार के प्रकार की चर्चा कीजिये।
- महासागरीय निक्षेप क्या होते हैं? स्रोत के आधार पर महासागरीय निक्षेप का वर्गीकरण कीजिये।
- सागरीय जैविक संसाधन पर प्रकाश डालिये।

भारत सहित विश्व के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण (Distribution of Major Natural Resources in the World Including India)

प्राकृतिक संसाधन, मानव जीवन के अस्तित्व, प्रगति एवं विकास के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। वास्तव में संसाधन उसे कहा जाता है जिसकी उपयोगिता मानव के लिये हो। कोई भी जैविक तथा अजैविक पदार्थ तब तक संसाधन नहीं हो सकता हैं जब तक वह मानव के लिये उपयोगी न हो, अर्थात् ऐसे पदार्थ या ऊर्जा जो मानव की सहायता के लिये उपयोग किये जाते हैं संसाधन कहा जाता है। संसाधन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं- नवीकरणीय संसाधन एवं अनवीकरणीय संसाधन। नवीकरणीय संसाधनों को पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है, जैसे- जल, सौर ऊर्जा, मृदा, वनस्पति इत्यादि। अनवीकरणीय संसाधनों का पुनः निर्माण निकट भविष्य में संभव नहीं हो सकता है, जैसे- खनिज, पेट्रोलियम, कोयला इत्यादि।

6.1 मृदा संसाधन (*Soil Resources*)

मृदा या मिट्टी भूतल की ऊपरी परत होती है जिसका निर्माण चट्टानों के टूटने से, पेड़-पौधों एवं जल, गैस तथा जीव-जंतुओं के अवशेषों के मिश्रण से होता है। इसे एक संसाधन माना जाता है, क्योंकि इसके निर्माण में काफी समय लगता है।

मृदा निर्माण के कारक (Factors of soil formation)

मृदा के निर्माण में कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं-

आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ

मिट्टी के निचले भाग में पाए जाने वाले चट्टानी संस्तर को आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ कहते हैं। मिट्टी का निर्माण चट्टानों के भौतिक एवं रासायनिक अपक्षय के कारण होता है।

जलवायु

जलवायु मिट्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी निश्चित जलवायु वाले क्षेत्र में दो विभिन्न जनक पदार्थ एक ही प्रकार की मिट्टी का निर्माण करते हैं।

स्थलाकृति

उच्चावच, ऊँचाई या ढाल आदि स्थलाकृतियों के घटक के रूप में मिट्टी के जमाव तथा उसके अपरदन पर प्रभाव डालते हैं। तीव्र ढाल वाले क्षेत्रों में अपरदन की क्रियाएँ अधिक होती हैं, जिसमें प्रायः मोटी मिट्टी की एक पतली परत रह जाती है। इसे अवशिष्ट मृदा कहते हैं।

जैविक पदार्थ

जैविक पदार्थों में वनस्पतियाँ, जीव-जंतु व मानवीय प्रभाव आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इन क्रियाओं द्वारा भी मिट्टी का विकास होता है।

विकास की अवधि अथवा समय

मिट्टी के निर्माण का कार्य बहुत मंद गति से होता है। समय बीतने के साथ मिट्टी के गुणों में भौतिक परिवर्तन आता रहता है। मिट्टी के विकास में तीन अवस्थाएँ शामिल होती हैं- (i) युवा अवस्था, (ii) प्रौढ़ अवस्था, (iii) जीर्ण अवस्था।

मृदा का सामान्य वर्गीकरण (General classification of soil)

संयुक्त राज्य अमेरिका में सी.एफ. मारबुट ने 1938 ई. में मिट्टी के वर्गीकरण की व्यवस्थित योजना प्रस्तुत की। उन्होंने विश्व भर की मिट्टी को आनुवंशिक कारकों के आधार पर 30 बड़े भागों में बाँटा तथा इन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया है, जो इस प्रकार हैं-

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल का एक प्रमुख अंग है जिसमें धरातल पर मानवीय आर्थिक क्रियाओं में अलग-अलग स्थानों पर पाई जाने वाली विभिन्नताओं को सम्मिलित किया जाता है। इन क्रियाओं में मृदा, जल, खनिज, ऊर्जा, जैविक तत्त्व आदि प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही पशुपालन, मत्स्यपालन, कृषि, परिवहन एवं संचार आदि शामिल हैं। आर्थिक संरचना संबंधी योजना भी भूगोल की शाखा है।

7.1 कृषि (Agriculture)

कृषि या खेती अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अंतर्गत विभिन्न फसलों एवं फलों, वनस्पतियों आदि को सम्मिलित किया जाता है। विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थितियाँ पाई जाती हैं। इस प्रकार कृषि की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न होती है। फलस्वरूप विश्व में फसलों का वितरण भी अलग-अलग होता है।

कृषि उत्पादकता (Agriculture productivity)

- बड़े कृषि क्षेत्रों में श्रम उत्पादकता ज्यादा रहती है परंतु जिन क्षेत्रों में सघन कृषि होती है उन क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर पैदावार ज्यादा होती है। इस प्रकार कृषि उत्पादकता का अर्थ प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति श्रमिक उत्पादन से है।
- इन दोनों स्थितियों में भारत में कृषि उत्पादकता में पिछड़ापन बना हुआ है। इसका मुख्य कारण कृषि पद्धति का पर्याप्त विकसित न हो पाना है, परंतु जिन क्षेत्रों में हरित क्रांति हुई थी, उन क्षेत्रों की प्रति श्रमिक व प्रति हेक्टेयर उत्पादकता अधिक पाई जाती है।
- कृषि उत्पादकता में दो महत्वपूर्ण कारक शामिल होते हैं- भौतिक व गैर-भौतिक।
- जलवायु, मिट्टी व स्थलाकृतिक ढाल जैसी अन्य विशेषताएँ भौतिक कारकों में शामिल हैं, जबकि संस्थागत व संरचनात्मक तथा राजनीतिक प्रयास गैर-भौतिक कारकों में शामिल हैं।
- कृषि उत्पादकता में उत्पादन की अधिकता पर विशेष बल दिया जाता है।

शस्य गहनता (Crop intensification)

- एक वर्ष में कई फसलों को उगाना शस्य गहनता कहलाती है। इसे निम्नलिखित सूत्रों से दर्शाया जाता है-
- शस्य गहनता = $\frac{\text{सकल फसल क्षेत्र}}{\text{वास्तविक कृषि क्षेत्र}} \times 100$
- यदि किसी कृषक के पास 10 हेक्टेयर कृषि भूमि है तथा वह खरीफ, रबी एवं जायद की फसलों में क्रमशः 10, 7 एवं 3 हेक्टेयर में कृषि करता हो तो-
$$\text{शस्य गहनता} = \frac{20}{10} \times 100 \text{ अर्थात् } 200 \text{ होगी।}$$
- फसल गहनता बढ़ाने के लिये सुव्यवस्थित सिंचाई, उर्वरक, मिश्रित फसल, कुशल यांत्रिकीकरण, उपयुक्त पौध सुरक्षा आदि उपाय किये जा सकते हैं।
- विश्व की प्रमुख फसलों की सामान्य जानकारी निम्नलिखित रूपों में प्राप्त की जा सकती है-

मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करते हुए देश के आर्थिक विकास में योगदान देता है। राष्ट्र की प्रगति प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों के उचित अनुपात पर निर्भर करती है। संसाधनों की अपेक्षा जनसंख्या का अधिक घनत्व होने पर प्रायः देश के आर्थिक विकास की दर धीमी रहती है।

मानव अपनी शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संस्कृति का निर्माण करता है, इसीलिये पृथ्वी पर विभिन्न क्षेत्रों में मानव संसाधन की संख्या (जनसंख्या), उसका प्रादेशिक वितरण, वृद्धि संरचनात्मक विशेषताओं, क्षमता तथा उसकी समस्याओं का अध्ययन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार स्वयं मानवीय शक्ति, बौद्धिक ज्ञान व तकनीकी में सबसे अधिक महत्वपूर्ण संसाधन है।

8.1 जनसंख्या के प्रकार एवं इसके प्रतिरूप (Types of Population and its Pattern)

जनसंख्या का आशय किसी भूक्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों की संख्या से है। पृथ्वी के विभिन्न भागों में जनसंख्या के वितरण में अत्यधिक विषमता पाई जाती है। जो स्थल-खंड मानव निवास के लिये उपयुक्त है वहाँ जनसंख्या का अत्यधिक संकेंद्रण पाया जाता है। इसके विपरीत पृथ्वी के अनेक बड़े-बड़े भूखंड मनुष्य के लिये अनुपयुक्त होने के कारण पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से निर्जन तथा वीरान पड़े हैं।

जनाधिक्य, अनुकूलतम जनसंख्या एवं अवजनसंख्या (Over population, optimum population and under population)

विश्व में जनसंख्या एवं संसाधनों के वितरण तथा तकनीकी विकास की दृष्टि से काफी अंतर पाया जाता है। किसी भी प्रदेश में उपलब्ध तकनीकी को ध्यान में रखकर जनसंख्या संसाधनों के आधार पर जनाधिक्य, अनुकूलतम जनसंख्या तथा अवजनसंख्या की स्थिति हो सकती है। अनुकूलतम जनसंख्या की स्थिति में जनसंख्या एवं संसाधनों का अनुपात संतुलित होता है। अतः ऐसी स्थिति में आर्थिक विकास का स्तर उच्च एवं प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। यदि संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक हो जाती है तो ऐसी स्थिति में संसाधनों पर जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है जिसके कारण जीवन स्तर निम्न हो जाता है। वहाँ अवजनसंख्या की स्थिति में संसाधनों की तुलना में जनसंख्या के कम होने के कारण आर्थिक विकास की प्रक्रिया मंद होती है। वर्तमान समय में पश्चिमी यूरोप, यू.एस.ए., जापान आदि देश अनुकूलतम जनसंख्या, दक्षिण एशिया, मध्य अमेरिका के देश जनाधिक्य एवं ब्राजील तथा मध्य एशिया के देश अवजनसंख्या के उदाहरण हैं।

आयु संरचना

आयु संरचना विभिन्न आयु वर्ग के लोगों की संख्या को प्रदर्शित करती है। जनसंख्या संघटक का यह एक महत्वपूर्ण सूचक है क्योंकि 15 से 59 आयु वर्ग के बीच जनसंख्या का विस्तृत आकार एक बड़ी कार्यशील जनसंख्या को इंगित करता है। 60 वर्ष से अधिक आयु वाली जनसंख्या का एक बड़ा अनुपात उस वृद्धि जनसंख्या को प्रदर्शित करता है, जिसे स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं के लिये अधिक खर्च की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार युवा जनसंख्या के उच्च अनुपात का अर्थ है कि प्रदेश में जन्म दर ऊँची व जनसंख्या का अधिकांश युवा है।

आयु-लिंग पिरामिड

जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना का अभिप्राय विभिन्न आयु वर्ग की स्त्रियों एवं पुरुषों की संख्या से है। जनसंख्या पिरामिड का प्रयोग जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना को दर्शाने के लिये किया जाता है। जनसंख्या पिरामिड की आकृति जनसंख्या की विशेषताओं को परिलक्षित करती है।

मानव भूगोल भूगोल की एक प्रमुख शाखा है जिसके अंतर्गत मानव की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल के अंतर्गत मानवीय तथ्यों, मानव व्यवसाय, पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण, विश्व की प्रजातियाँ व जनजातियाँ, प्रवास व स्थानांतरण, नगरीकरण आदि का अध्ययन समाहित होता है। यह पृथ्वी और मनुष्य के अंतर्संबंधों की एक नई संकल्पना प्रस्तुत करता है।

9.1 विश्व की प्रजातियाँ तथा जनजातियाँ (*Species and Tribes of the World*)

मानव प्रजाति से तात्पर्य उस मानव वर्ग से है जो वंशानुक्रम के द्वारा शारीरिक लक्षणों में समानता रखता हो। यह एक जैविक उपचार है जिसका संबंध उस वर्ग से होता है, जिसमें जैविक रूप से कुछ समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। किसी भी मानव प्रजाति के शारीरिक लक्षण वंशानुक्रम द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी समान रहते हैं।

प्रजाति के लक्षण और वंशज गुण आनुवंशिकता के द्वारा संक्रमण करते रहते हैं। अतः वह मानव वर्ग जिसके सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना के लक्षण, जैसे-त्वचा का रंग, सिर की लंबाई एवं चौड़ाई, बाल, नाक का नुकीलापन या चपटापन, होंठों की मोटाई आदि लगभग एक जैसे हों, प्रजाति के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। ये विशेषताएँ जीन (Gene) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचालित होती हैं।

मानव उद्विकास का क्रम (*Sequence of human evolution*)

आदिमानव से वर्तमान मानव के विकास का क्रम निम्नलिखित है—



मानव विकास का क्रम	विशेषताएँ
पिथेकैंथ्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> इसे आदिमानव समझा जाता है। पिथेकैंथ्रोपस शब्द का अर्थ सीधा खड़ा होने वाला मानव अर्थात् वानर मानव से है। यह वनमानुष एवं वर्तमान जीव के बीच की कड़ी है। इस मानव के जीवाशम जावा द्वीप पर पाए गए थे। इसे जावा मानव भी कहा जाता है तथा वर्तमान में इसे 'होमो इरेक्टस' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
सिनेनथ्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> यह आदिमानव के बाद का मानव था। इस मानव का मस्तिष्क वनमानुष की अपेक्षा बड़ा था। इस मानव को 'पेकिंग' मानव भी कहा जाता है। इसके जीवाशम चीन से प्राप्त हुए हैं। इस मानव के शरीर में कई परिवर्तन हुए।
हाइडिलबर्ग मानव	<ul style="list-style-type: none"> यह मानव वर्तमान मनुष्य से अधिक मिलता-जुलता है। हाइडिलबर्ग मानव प्लीस्टोसीन काल के प्रथम हिमयुग का है। जर्मनी के हाइडिलबर्ग के समीप इस मानव के जबड़े की हड्डियाँ मिली थीं।

विश्व में परिवहन के प्रमुख साधन (Major Mode of Transport in the World)

विश्व की किसी भी अर्थव्यवस्था में परिवहन के साधन उसके विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं क्योंकि आर्थिक विशेषीकरण तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन परिवहन एवं संचार के साधनों की सुलभता पर ही निर्भर है। वस्तुओं या व्यक्तियों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन के साधन को परिवहन कहते हैं। परिवहन एवं संचार व्यापार केंद्रों, उत्पादन केंद्रों और उपभोग केंद्रों को जोड़ते हैं। कई दुर्गम स्थलों में परिवहन के साधन के अभाव में मनुष्य अपना बोझ स्वयं एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाता था। बाद में पालतू पशुओं को भी परिवहन का साधन बनाया गया। परिवहन स्थल, जल व वायु मार्ग से होता है। सड़कें व रेल मार्ग स्थलीय परिवहन का हिस्सा हैं, जबकि नौ परिवहन जल परिवहन का। वहीं वायुमार्ग वायु परिवहन का हिस्सा है। इसके अलावा पाइपलाइनों के माध्यम से भी पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस व तरल पदार्थों का परिवहन किया जाता है।

परिवहन के माध्यम तथा उनका सापेक्षिक महत्व (Mode of transport and their relative importance)

दो प्रदेशों के मध्य परिवहन विभिन्न माध्यमों के द्वारा स्थापित हो सकता है। विभिन्न काल एवं विभिन्न क्षेत्रों में परिवहन के अनेक माध्यम मिलते हैं। प्राचीनकाल में मनुष्य स्वयं अपना बोझ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाता था। उसके पश्चात् जब कुछ पशुओं को मनुष्य ने पालतू बनाया तब पशु ही परिवहन के प्रमुख माध्यम हो गए। तत्पश्चात् पहिये का आविष्कार परिवहन के क्षेत्र में क्रांति लेकर आया और बैलगाड़ी या घोड़गाड़ी द्वारा परिवहन होने लगा। वर्तमान में भी प्रारंभिक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में इस प्रकार के परिवहन माध्यमों का महत्व है। जंगलों से लकड़ी बाहर निकालने के लिये उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में हाथी का उपयोग होता है, मरुस्थलों में ऊँट तथा बीहड़ पर्वतीय क्षेत्रों में टट्ठू तथा खच्चर आज भी परिवहन के साधन हैं किंतु वर्तमान में इस प्रकार के परिवहन का महत्व नगण्य है।

परिवहन के आधुनिक साधनों में विशाल जलयान, रेलगाड़ी, वायुयान, ट्रक, कार, कार्गो आदि मुख्य हैं। परिवहन के प्रमुखतः चार माध्यम हैं— (1) जलमार्ग, (2) रेलमार्ग, (3) सड़क मार्ग तथा (4) वायुमार्ग। विश्व स्तर पर सामुद्रिक जल परिवहन द्वारा विशाल जलपोत अधिकांश माल ढाते हैं। वायुयानों द्वारा यद्यपि कुछ हल्की व मूल्यवान वस्तुओं के साथ अतिशीघ्र पहुँचाई जाने वाली वस्तुओं (जल्दी खराब हो जाने वाले पदार्थ) का परिवहन हो रहा है। आंतरिक जल परिवहन का महत्व उन देशों में अधिक है, जहाँ जल परिवहन के लिये उपयुक्त नदियाँ हैं। जल परिवहन में सबसे कम व्यय किंतु अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है। लंबी दूरी तथा कम समय में देश के आंतरिक भागों में माल ढुलाई के लिये रेल परिवहन उपयुक्त साधन है, क्योंकि लंबी दूरी होने पर परिवहन का मूल्य कम हो जाता है। स्थानीय स्तर पर दैनिक वस्तुओं की आपूर्ति के लिये सड़क परिवहन की उपयुक्तता है। पहाड़ी व दुर्गम क्षेत्रों में वायु परिवहन व सड़क परिवहन का महत्व है। हालाँकि, तकनीकी विकास ने पहाड़ी क्षेत्रों में भी रेलवे का विकास संभव बनाया है।

सड़क परिवहन (Road transport)

सड़कें परिवहन का प्राचीनतम साधन हैं। यह छोटी दूरी व स्थानीय स्तर पर वस्तुओं व व्यक्तियों के आवागमन को सुनिश्चित करने का उपयोगी साधन है। सड़कों का आधुनिक परिवहन साधन के रूप में उपयोग 19 वीं शताब्दी में शुरू हुआ जब मोटर-गाड़ियों का आविष्कार होने लगा। विश्व में सर्वाधिक सड़कों की लंबाई यू.एस.ए. में है। विश्व में सड़कों की लंबाई रेलों की लंबाई की तुलना में 15 गुनी है। विश्व के कुछ प्रमुख सड़क मार्ग निम्नलिखित हैं—

- **अलास्का महामार्ग:** यह अलास्का के एंकरेज नगर को कनाडा के एडमार्टन नगर से जोड़ता है।
- **स्ट्रुअर्ट महामार्ग:** यह उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में स्थित इस महाद्वीप का सबसे लंबा महामार्ग है, जो बिरडुम नगर (उत्तरी ऑस्ट्रेलिया) को एलिस स्प्रिंग तथा टेनेंट क्रीक होते हुए उड़नादत्ता नगर (दक्षिण ऑस्ट्रेलिया) को जोड़ता है।

महाद्वीप और महासागर धरातल के प्रथम उच्चावच हैं। महाद्वीपों के निर्माण में प्लेटों की गति की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। सर्वप्रथम एंटोनियो स्नाइडर ने 1858 ई. में महाद्वीपों के प्रवाह की संभावना को व्यक्त किया था किंतु वेगनर महोदय ही सर्वप्रथम महाद्वीप व महासागर की उत्पत्ति की स्पष्ट व्याख्या देने में सफल हुए।

वेगनर के अनुसार कार्बोनीफेरस काल में सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे जिसे पैंजिया कहा गया तथा पैंजिया के चारों ओर स्थित विशाल सागर को पैंथालासा का नाम दिया गया। अंतिम-ट्रियासिक युग में पैंजिया का विभाजन प्रारंभ हुआ तथा वह दो भागों में बँट गया। इसका एक भाग उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे अंगारालैंड कहा गया तथा दूसरा भाग दक्षिण की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे गोंडवाना लैंड कहा गया।

अंतिम-क्रिटेशियस युग में गोंडवाना लैंड का भी विभाजन आरंभ हो गया, जिसके फलस्वरूप दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, प्रायद्वीपीय भारत, मेडागास्कर तथा ऑस्ट्रेलिया का निर्माण हुआ। अंगारालैंड के टूटने के कारण उत्तरी अमेरिका, यूरोप तथा एशिया बना। विस्थापन की इस प्रक्रिया में कई भौगोलिक व जलवायिक परिवर्तन देखने को मिले।



11.1 एशिया (Asia)

एशिया जनसंख्या व क्षेत्रफल, दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। एशिया को यूरोप से भूमध्य सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, यूराल पर्वत तथा डार्डेनेल्स व बॉसपोरस जलसंधियाँ अलग करती हैं, वहीं बेरिंग जलसंधि इसे उत्तरी अमेरिका से अलग करती है।

लाल सागर तथा स्वेज जलडमरुमध्य एशिया को अफ्रीकी मुख्यभूमि से अलग करते हैं। एशिया महाद्वीप का अधिकांश भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है किंतु इंडोनेशिया के कुछ द्वीप दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित हैं।

एशिया के स्थलरुद्ध देश

- मांगोलिया, कजाकिस्तान, नेपाल, भूटान, तुर्कमेनिस्तान, उज़्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, तज़ाकिस्तान, लाओस, अफगानिस्तान।
- स्थलरुद्ध देशों में कजाकिस्तान सबसे बड़ा देश है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- किंवदं रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com



641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456